भजन

तर्ज–किसी ने अपना बना के मुझको मुस्कुराना

सुना के वाणी मेरे धनी ने, आत्म को मेरी जगा दिया

1–जो भेद ग्रन्थों में भी लिखा है,जाने न उसको कोई जहां में
वो भेद वाणी से ही बता कर,मूल ठिकाना बता दिया

2–वो रंग भरते हैं जिंदगी में,बदल गया है मेरा जहां
मेहर पिया की बरस रही है,हमने दामन बिछा दिया

3–कभी हंसायें कभी रूलायें,सभी की डोरी उन्हीं के हाथ
कभी जो मस्ती में आ गए तो,नैनों से सागर पिला दिया